रिक़ डिः-मुरव डा देरव ले प [illegible] ओम शान्तिः प्रातः क्लास 25-5-67

बच्चे जब बैठते है सुनते है तो अपने को आत्मा निश्चय कर बैठे ओर यह निश्चय करें कि परमात्मा बाप हमको पढा रहे है। यह सब डायरेक्शन अथवा मत एक ही बाप देते है। उसको ही श्रीमत कहा जाता है। श्री अर्थात श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ। वो है बेहद का बाप जिनको ही ऊँच मे ऊँच भगवान कहा जाता है। बहुत है जो उस लव से परमात्मा को [illegible] समझते ही नही है। भल शिव के भक्त है बहुत जाकर प्यार भी करते है। परन्तु आज कल के सन्यासियो ने कह दिया है कि परमात्मा भित्तर-ठिक्कर मे है तो फिर वो भी लव किसमे रखें। इसलिये ही बाप से विप्रीत बुधी हो गये है। भक्ति [illegible] में जब कोई दुःख वा रोग आदि होता है तो प्रीत दिखाते है। कहते है हे भगवान रक्षा करो। साथ-2 मे फिर ग्लानी भी करते है कि परमात्मा ठिक्कर भित्तर सबमे है। बच्चे जानते है गीता है श्रीमत भगवान के मुख से गाई हुई। ओर कोई ऐसा शास्त्र नही है जो भगवान द्वारा गाया गया हो, वा उसमे श्रीमत दी हो। एक ही भारत की गीता है जिसका ही इतना प्रभाव भी है। एक गीता ही भगवान की गाई हुई है। उनका ही प्रभाव है। निराकार भगवान तरफ ही दृष्टी जाती है। उंगली से इशारा ऊपर मे करेंगें। कृष्ण के लिये ऐसे नही करेंगे क्योकि वो तो देहधारी है ना। नीचे रहने वाला है। तुमको अब उनके साथ सम्बन्ध का पता पडा है। इसलिये कहा जाता है कि बाप को याद करो। उनसे ही प्रीत रखो। आत्मा अपने बाप को याद करती है। अभी वो भगवान बच्चो को पढा रहे है तो नशा बहुत चढ़ना चाहिये ओर बहुत जल्दी चढ़ना चाहिये। ऐसे नही कि ब्राह्मणी सामने हो तो नशा चढ़ा रहे ब्राह्मणी सामने नही तो नशा उड जावे। बस ब्राह्मणी बिना तो हम क्लास ही नही कर सकते है। बाबा कोई-2 सेन्टर्स के लिये समझाते है कि कहीं से तो ब्राह्मणी 5,6 मास भी बाहर निकल जाती है तो अपने आप क्लास सम्भालते रहते है। क्योकि पढाई तो साधारन है। कोई कोई तो ब्राह्मणी बिना ~~जैसे कि अन्धे लूले हो जाते है।~~ ब्राह्मणी निकल [illegible] आई तो सेन्टर पर जाना छोड देगें। ओर बहुत बैठे है क्या क्लास नही चला सकते? गुरु बाहर मे चला जाता है तो उसके चेले पिछाडी मे सम्भालते है ना। यहाँ तो ब्राह्मणी बिना जैसे कि अन्धे बन जाते है। अभी तो तुम अन्धे से सजा बन रहे हो तो ऐसे थोडेही होना चाहिये। बाबा समझाते है कि धारना नही होती तो सेन्टर नही सम्भाल सकेगें। ठण्डे पड जाते है। बच्चो को तो सर्विस करनी है। स्टुडण्टस मे नम्बरवार तो होते ही है। बाबा जानते है कि कहाँ पर फर्स्ट क्लास को भेजना है कहाँ पर थर्ड क्लास को भेजना है। इतने वर्ष सीखे है तो कुछ तो धारना हुई होगी जो सेन्टर को चलावे आपस मे मिल। मुरली तो मिलती ही है। पुआईन्टस के आधार पर ही समझाते है। सुनने की टेव पडी है फिर सुनानी की टेव पडी नही है। याद मे रह तो धारना भी हो। सेन्टर पर ऐसी तो कोई होनी चाहिये ना जो कहे कि अच्छा ब्राह्मणी जाती है तो हम सम्भालेंगें। बाबा ने ब्राह्मणी को कहीं अच्छे सेन्टर पर भेजा है सर्विस करने लिये। तो ब्राह्मणी बिना मूंझ नही जाना चाहिये। ब्राह्मणीं जैसे नही बनेंगे तो दुसरो को आपसमान कैसे [illegible] बनायेंगें। मुरली तो सबको ही मिलती है। बच्चो को खुशी होनी चाहिये हम गदी पर बैठ कर समझावे। हर एक प्रक्टिस करने पर ही तो सर्विसबुल बन सकते है ना। बाबा पूछते है कि सर्विसबुल बने हो। तो कोई भी नही निकालते है। तो कोई भी नही निकलते है। सर्विस पर जाने लिये तो झूठ मूठ की बिमारी का भी सार्टीफिकेट ले लेते है। यह तो बच्चो को मालूम है कि हम सब बिमार है। अभी तुम आधा कल्प के लिये तंदरुस्त बन रहे हो तो भी सर्विस के लिये बुलावा हो तो झट चले जाना चाहिये। बाबा कोशिश भी कर रहे है कि जो बन्धन मुक्त है तो नौकरी भी छुडवा देगें। उस गवर्मेन्ट से तो इस गवर्मेन्ट की यह पढाई बहुत ऊँची है। भगवान पढाते है जिससे हो तुम 21 जन्मो के लिये बैकुण्ठ का मालिक बनते हो। कितनी भारी आमदनी हुआ करती। उस से क्या मिलेगा? अल्प काल का सुख। यहाँ पर तो विश्व का मालिक बनते हो। जिनको तो पक्का निश्चय है वो तो कहेगें कि हम उस नौकरी टोकरी को क्या करेंगे। परन्तु पूरा नशा चाहिये। देखना है कि मन [illegible]

किसीको समझा सकते है? है तो बहुत सहज। समझाना है कि कलयुग अन्त मे 500 करोड़ मनुष्य हैं। सतयुग में जरूर फिर थोडे ही होंगें। उसकी स्थापना के लिये बाप जरूर संगम पर ही आवेंगें।पुरानी दुनियां का विनाश होना है। महाभारत की लडाई भी मशहूर है। यह लगती हीतब है जबकि भगवान आकर संगम पर राजयोग सिरवा कर राजाओं का राजा बनाते है ना तो। कर्मातीत अवस्था को प्राप्त कराते है। कहते है देह सहित देह के सब धर्म छोड कर मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगें। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना इसमे ही मेहनत है। योग का अर्थ एक भी मनुष्यनही जानते है। सन्यासियों नें तो अनेक प्रकार के मनोमय योग बैठ कर बनाये है। भक्ति मार्ग की है सब मनोमय बाते। कहते है यह शास्त्र वेद व्यास भगवान ने बैठ कर बनाये है। बाप समझाते है कि यह सब ड्रामा में नूंध है जो भक्ति मार्ग में बैठ बनाते है। बाकी व्यास कोई भगवान होता ही नही है।जब-2 भक्ति शुरू होती है तो यह शास्त्र आद बनतेजाते है। दुर्गति मे जाने लिये। क्योंकि यह सब है मनोमय। इसमे कोई फायदा नही। नुकसान ही नुकसान है।जन्मजन्मान्तर झूठी गीता पढ़ते आयें है। झूठी और सच्ची गीता मे रात-दिन का फर्क है। बाप की बायोग्राफी मे बच्चे का नाम डाल देते है। बाप की जीवन कहानी है बिलकुल अलग। वो पुर्नजन्म रहित और वो बच्चा जो कि पुरे 84जन्म लेता है उसका नाम डाल दिया है। मनुष्यों को उल्टा सुना कर और ही फायदे के बदले नुकसान कर देते है। यह शास्त्र भी बनने है। भक्ति मार्ग चलना ही है। खेल बना हुआ है ज्ञान भक्ति और वैराग। वैराग भी दो प्रकार का होता है। सन्यासी लोग घर बार छोड कर जाते है जब कि सतोगुणी थे। अभी तो तमोप्रधान होनके कारण बेगर लाईफ को छोड कर रायल लाईफ मे आ गये है। बडे-2 फ्लेटस मोर्टस है। परन्तु मनुष्य भी इतने पत्थर बुधी है तब भी समझते है कि इन्होने घर बार को छोडा है। सब इनके चरणों में झुकते रहते है। यह नही समझते है कि यह तो तमोप्रधान है। गवर्मेन्ट के भी गुरू बन बैठे है। नन्दा, ~~बाबू हेड गुरू बन बैठा है। मनुष्यों को तो फिर गुरूओं का हेड~~ बनना नही चाहिये। परन्तु आजकल मानें तो सब चाहते है ना। बाप समझाते है कि बिलकुल ही रैप बुधी है। भक्ति मार्ग में सबसे रैप्स बुधी वो है जो बहुत वेद शास्त्र आद पढ़ते है। एक ही बात मे तमोप्रधान बन जाते है बाप को सर्वव्यापी कह देते है। भारत वासियों को बाप से बिलकुल ही बेमुरव विप्रीत बुधी कर दिया है। परन्तु कुर्पा होती तो गाली थोडेइदेते। बाप कहते है सबोस जलती तो मैर को गाली देते है। श्रीकृष्ण को राम को कितनी गाली देते है। यह सब बाते बाप ही आकर समझाते है। भक्त है ही वैशाल्य मे रहने वाले।तुम बच्चे जानते हो कि हम अब शिवाल्य मे जा रहे है। तुम सभी ब्र,कु,कु भाई-बहन हो। विकारी दृष्टी जा नहीं सकती। आज कल तो बच्ची पर बाप, भाई बहन पर, गुरू शिष्य पर क्रिमनलएसाल्ट करते रहते है। तमोप्रधान है नां। साधु सन्त आद भी गन्दे काम करते रहते है। बडे-2 आदमियों के लिय तो रवास वैशाल्य रहते है। इनका नाम ही है वेशाल्य नर्क। परन्तु अपने को नर्कवासी समझते थोडेई है। स्वर्ग का पत्ता ही नही तो कह देते है कि स्वर्गनर्क यही ही है। कितनी भी स्त्रियाँ रखो तो उसमे क्या है। यह गन्दे संस्कार क्यो पडे? क्योकि समझते है कि कृष्ण को बहुत रानियां थी। (निजाम का मिसाल) बोलो हिन्दुओं के भगवान कृष्ण ने 1600रानियी रखी हमने 500 रख ली तो क्या हो गया।शास्त्रो ने कितना गन्द उठाया है। जैसे अभी-2 शंकराचार्य कहते है चार-2 शादी करने के लिये पचंयाती राज्य है नां।जो जिसके मन में आता है वो कहते रहते है। यह कोई सावरन्टी नही है। इनको किंगडम नही कहा जावेगा। किंगडम थी! कितना बल था। अब फिर तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। विश्व का मालिक बन जाओगें। यहां तो तुम और ही हो विश्व का मालिक बननें। हेवनली गाड फादर जिनको शिव कहा जाता है। वो तुमको पढाते है। बच्चो मे कितना नशा रहना चाहिये। बहुत इज़ी नालेज है। तुम्हारा

रहती है कि यह कोई आइम्पी थोडेई है। यह क्या जानती है। बस। दुसरे दिन फिर आयेगे भी नही। ऐसी आदत पडी हुई है जिसकारणही डिससर्विस भी होतीहै। नालेज तो बडी इजी है। कुमारियों को तो कोई धन्धा आद भी नही है। इनसे पुछा जाता है वो पढाई अच्छी वा यह पढाई अच्छी है? तो कहती है यह तो बहुत अच्छी है। बाबा अभी हम तो वो पढाई नही पढ़ेगें। दिल नही लगता है। लौकिक बाप ज्ञान मे नही होगा तो खावेगी मार। फिर कोई बच्चियां कमजोर भी होती है। समझना चाहिये नी अरे- इस पढाई से हम महारानी बनूगी। उस पढाई से क्या हम पाई पैसे की टोकरी करेंगे।यह पढाई तो हमको 21 जन्मो के लिये स्वर्ग का मालिक बनाती है। प्रजा भी स्वर्गवासी तो बनती है नी। अभी है नर्कवासी। यह है ही वैशाल्य।वैशाल्य अक्षर खराब है। अब बाप कहते है तुम सैवगुण सम्पन्न... थे। अब तुम्ही कितने तमोप्रधान बन गये हो। सीढी उतरते आये हो। भारत जो सोने की सोने की चिडया कहलाता था। अभी तो वो ठिक्कर की भी नही है। भारत 100%सालवन्ट था। अब 100% इनसालवन्ट है।तुम जानते हो हम विश्व के मालिकपारस नाथ थे। फिर 84पूरे जन्म लेते-2 अभी पत्थरनाथ बन गये हो। [illegible] हो तो मनुष्य ही परन्तु पारसनाथ और पत्थरनाथ कहा जाता है। गीत भी सुना अपने अन्दर को देखो हम कहाँ तक लायक है। भारत का भी मिसाल है नी। बाप समझाते है यह सब बन्दर सम्प्रदाय है। सभी मे पाँच विकार है। भ्रष्टाचार से पैदा होते है। सन्यासी भी पुर्नजन्म तो विकार से ही लेते है नी। फिर संस्कारो अनुसार चले जाते है। पुर्नजन्म तो सभी लेते है। पहेल नम्बर का शंकराचार्य भी पुर्नजन्म लेते-2 इस समय तमोप्रधान बना हुआ है। जैसे यह लक्ष्मी-नारायण सतोप्रधान थे अब पुर्नजन्म लेते-2 तमोप्रधान है। देवी देवता कहलाते भी लज्जा आती है। मुर्ख-क्योकि पतित है। इसलिये हिन्दु कह देते है। और फिर जैसे सन्यासी लोग अपने को शिवोअहम् कह देते है वैसे यह भारतवासी भी समझते है हमवहत श्रेष्ठ है। श्री-2 का टाईटल देते रहते है। श्री जाकिर हुसेन। जो भी जिस पोस्ट पर होगा उनको श्री कह देंगे। जो गवर्मेन्ट होती है वो अपना ही सब चलाती है। भाषा आद सब बदल लेते है। अभी तो देखो किलो मीटर आद क्या-2 निकाले है। फिर नेय सिर सब कुछ सीखना पडता है। दिन प्रति दिन गिरते ही जाते है। गिरते-2 एकदम वर्ति मर्ग के दुबन मे गले तक पडे पडे है। अब तुम ब्राह्मण सभी को चोटी से पकड कर दुबन से बाहर निकलते है। और कोई पकडने की जगह तो है नही। तो चोटी से पकडना सहज होता है। दुबन से निकलने लिये चोटी से पकडना होता है। दुबन मे तो ऐसे [illegible] पडे हुयेहै कि जो बात ही मत पुछो। भक्ति का राज्य है नी। अभी तुम कहते हो बाबा हम कल्प पहले भी आपके पास आये थे। राज्यभाग पाने। लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर तो बनाते रहते है। परन्तु उनको यह पता नही है कि यह विश्व के मालिक कैसे बने। अभी तुम कितने समझदार बने हो। तुम जानते हो उन्होने यह राज्यभाग कैसे पाया। फिर 84जन्म कैसेलिये। बिडला के कितने मन्दिर बनाये हुये है जैसे गुडियां बना लेते है। वो छोटी-2 सब यह वो गुडियां बनाते है। चित्र बना कर पुजा आद करना उनका आक्यूपेशन नही जानना तो गुडियों की ही पुजा हुई नी। अभी तुम जानते हो बाप ने हमको कितना शाहुकार बनाया था।अब कितने कंगाल बन गये है। जो पुज्य थे सो ही पुजारी बन गये है। भक्त लोग फिर भगवान के लिये कह देते है कि आप ही पुज्य आपही पुजारी। आपही सुख देते हो आपही दुख देते हो21 सब कुछ आपही करते हो। बस इसमे मस्त हो जाते है। कहते है आत्मा निर्लेप है। कुछ भी खाओ पीओ मौज करो। शरीर को लेप लगता है। वो गंगा स्नान से शुद्ध हो जावेगा। जो चाहिये सो ही खाओ। क्या-2 फैशन है। बस जिसने जो रिवाज डाला वो ही चल उठता है। आगे मनुष्यो को आदम खोर कहते थे। मनुष्यों की बी देवी पर बलि चढ़ाते थे। मनुष्यों की मति तो देखो कैसी हो गई है। अब बाप बैठ समझाते है कि वैशाल्य से बदल चलो शिवाल्य मे। सतयुग को क्षीर सागर कहा जाता है। यह है विषय सागर। तुम जानते [illegible] पतित [illegible] तो पतित पावन [illegible] पर समझाते

जरता है कि मनुष्य सहज रीती सें समझें। सीढी में पुरे 84जन्मो का वर्णन है। इतनी सहज बात भी किसको समझा नही सकते। बाबा समझेंगें कि पुरा पढते नही है। दुर्गति मे ही रखा है। किचड़ा के कीडे होते है नां। तुम हो भ्रमरी, कीडो को भूं-2 करकें आप समान बनाते हो। यह भ्रमरी अथवा सर्प आद का मिसाल सन्यासी लोग समझा नही सकते। यह तो बाप तुम बच्चो को समझाते है। जैसे सर्प पुरानी खल खल छोडकर नई ले लेते है। तुम भी जानते हो कि यह पुराना सडा हुआ शरीर है।इसको छोडना है। यह दुनियां भी पुरानी है।शरीर भी पुराना है। यह छोड कर अब नई दुनियां में जाना है। तुम्हारी यह पढाई है ही नई दुनियां स्वर्ग के लियें। अब यह पुरानी दुनियां तो खलास हो जानी है। सागर की एक ही लहर से सारा डांवाडोल हो जावेगा। पानीमुख मे पड गया तो ले यह मरा। विनाश होना ही है नां।नैचरल कलैमिटीज तो किनको भी छोडती नही है। आगे चल कर विनाश सा0 करेंगें। भविष्य मे हम क्या जाकर बनेंगें वो भी देखेंगें। परिक्षा मे नापास होते है तो फिर बहुत पछताते है। तुम भी समझेंगें कि बाबा ने हमको कितना समझाया कि पढो समय वेस्टनही करो। यह सारा मोस्ट वैल्युबुल समय है। बाप तो बहुत सहज समझाते है। मुझे याद करो तो पाप नष्ट हो जावेंगें।एवी हैल्दी बन जावेंगें। शान्ति धाम मे जाकर फिर सुख धाम मे आ जावेंगें। आत्मा को सा0 हुआ है 84जन्मो का। बाबा की शंखध्वनी से तुम भी शंखध्वनी करती हो। तुम ही स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। परन्तु अलंकार तुमको शोभेंगें नही। इसलिये ही विष्णु को देते है। जो अच्छी रीती पढेंगें वो ही उंच पद पावें= पावेंगें। यह लनरेब अलंकार है। बाकी विष्णु कुछ है थोडेही। बाप बैठ समझाते है भक्ति मार्ग मे सब अनराईटियस ढोंग चित्र है। शरीट चित्र है तो उनकी बायोग्राफी को नही जानते है। ल-न का चित्र को अलंकार दे दिया। उनका राज्य था। चतुर्भुज का युद्ध तो नही करेंगें। कथा भी सत्यनारायण की ही कहते है। तुम भी अभी सच्ची-2 कथा सुन रही रहेहो। यह एक ही कथा है नर से नारायण बनने की। वो झूठी कथायें तो जन्मजन्मान्तर सुनते और गिरते ही आये है। तुम जानते हो विनाश होना ही है। इसलिये फिर भक्ति मार्ग मे कुम्भ दशहरा बनाते है। अब= अभी तुम संगम पर हो। स्वर्ग की राजाई भी देखते हो। विनाश भी देखते हो। बच्चों को राजाई मिलती है बाप दवारा। उनका जब राज्य था तो और कोई धर्म नही था। इन ल-न का भारत मे राज्य था। आदी सनातन देवी देवता धर्म के बदले हिन्दु धर्म कह देते है। बाप कहते है कि कितने बुद्धियट बन गये है। अभी मै इनमे प्रवेश कर तुमको सिखा रहा हूं। यह भी सीखते जाते है। तुमको सिखा रहा हूं मै थोडेही सीखता हूं। बाकी कोई घोडे गाडी आद की बात नही है। भूल कितनी नाजुक कर दी है। ब्रहमा सो नारायण बनते है। ब्रहमा सो विष्णु युगल। विष्णु युगल सो ल-न युगल। ब्रहमा सरस्वती के साथ दिखाते है। बाकी युगल मनुष्य कोई होते नही है। चार भुजा वाले। वां चतुर्भुज होते है। मनुष्य तो मनुष्य ही होते है। और मनुष्य भी यहीपर ही होते है। वो कोई सूक्ष्म वतन मे नही होते है। विष्णु भी यहीं ही चाहिये। बाकी तो सब भक्ति मार्ग के चित्र है। बाप कहते है इन सबको भूल जाना है। कोई चित्र को याद नही करना है। सिर्फ एक बाप को ही याद करना है।बाकी सबको भूल जाना है। अपने पास डायरी रखो। सारे दिन भर मे हमने कोई पाप तो नही किया? कोई को दुःख तो नही दिया? बाप को कितना याद किया? जितना याद करेंगें उतने पाप कटेंगें। बाप कहते है अपना मुखडा देखो। सारे दिन मे बाप को कितन । याद किया?कितने अन्धों की लाठी बने? फिर ऐसा कोईनही कहने पाये कि हमको कोई पैगाम थोडेई मिला जो कि हम बाप को याद करते। तुम बच्चो को तो सबको पैगाम देना है। बाप कहते है मौत सामने ही खडा है। नैचरल कलैमिटीज मे भी कितना नुकसान होता है। बम्बस मे भी आग तो ऐसी है जो घर मे [illegible] बैठी है। बिजली मे कोई के [illegible] नही है ऐसी चीजें निकलते है